B.A. PART-1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य

प्रश्न :- रीतिकालीन वीर-काव्य की विशेषताएँ बतायें ?

उत्तर :-

रीति-काल में विविध धाराओं में साहित्य का सृजन हुआ है, वीर-साहित्य उसमें से एक महत्वपूर्ण धारा रही है। संस्कृत-प्राकृत की वीरोपासक परम्परा ग्रहण करते हुए रीति-काल में वीर-साहित्य वीर-गाथाओं के रूप में निर्मित हुआ। भक्ति-काल में भक्ति-प्रवृत्ति की व्यापकता ने वीर-साहित्य की प्रवृत्तियों को अपने में समावेशित किया। रामभक्ति साहित्य में राम की वीरता का भक्त्यात्मक चित्रण किया गया और सूफी साहित्य में शृंगाराश्रित वीर-भाव का चित्रण हुआ। रीति या शृंगार-काल में वीर-साहित्य का द्वितीय उत्थान के रूप में प्रणयन हुआ। आदि-काल और भक्ति-काल से प्रभावित यह धारा इस काल में पूर्व के दोनों कालों की कुछ प्रवृत्तियों को भी समेटती है। इसलिए इस काल के वीर-साहित्य में कुछ प्रवृत्तियाँ आदि-काल की भी हैं और कुछ नयी, इन सबको समेटते हुए भी रीति या शृंगार-काल के वीर-साहित्य की विशेषताएँ इस प्रकार वर्णित की जा सकती हैं:—

(1) विभिन्न क्षेत्रों की रचनाएँ :

इस काल में वीर-साहित्य विभिन्न क्षेत्रों में रचा गया है। राजनैतिक दृष्टि से यह काल-खण्ड शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता के अभाव में छोटे-छोटे शासकों एवं सामन्तों का युग है। प्रत्येक क्षेत्र के छोटे-बड़े शासकों तथा सामन्तों के दरबार में आश्रित कवि और स्वयं आश्रयदाता सम्मान पाते थे। प्रत्येक क्षेत्र में राजनैतिक अशान्ति, परस्पर वैमनस्य के कारण छोटे-बड़े संघर्ष चल रहे थे, अतः कवियों के लिए वीरता का बखान करने हेतु पर्याप्त अवसर प्राप्त था। उस समय

एक कहावत प्रचलित थी कि "नाव तो गीतड़ के गीतड़ा सूँखे" अर्थात व्यक्ति का नाम और यश तो गीतों या काव्य में सुरक्षित रहता है अथवा गीतों अर्थात किले, महल, मन्दिर आदि से इतर। पहला रास्ता अधिक सुविधाजनक था, इसीलिए शासक या सामन्त अपनी वीरता को काव्य के रूप में सुरक्षित करना चाहते थे। उनकी आज्ञा और प्रेरणा से देश के सभी क्षेत्रों में वीर-काव्य लिखा गया। हिन्दी-इतर क्षेत्रों में भी कुछ प्रबन्ध और मुक्तक-रूप में हिन्दी में वीर-साहित्य लिखा गया। भक्ति-काल में ही हिन्दी-इतर क्षेत्र के राजाओं ने क्षेत्रीय भाषा के कवियों के साथ-साथ हिन्दी-भाषी कवियों को भी आश्रय दिया है। साथ ही क्षेत्रीय भाषा के दरबारी कवियों ने भी क्षेत्रीय भाषा के साथ ही स्फुट रूप में हिन्दी में भी अपने आश्रयदाताओं की वीरता का बखान किया। हिन्दी-क्षेत्र के दरबारी कवियों ने रीति-ग्रन्थों में वीर-रस के उदाहरण के रूप में तथा स्वतंत्र रूप में अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्तियाँ, भक्त-कवियों ने देवता की वीरता की स्तुति के रूप में तथा कुछ स्वतंत्रचेता कवियों ने राष्ट्रीय चेतना के रूप में सचेत राजाओं की राष्ट्रभक्ति और वीरता से प्रभावित वीरोपासना की अभिव्यक्ति की है। तात्पर्य यह है कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रवृत्तियों के कवियों ने विभिन्न दृष्टिकोण से वीर-साहित्य का सृजन किया है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस विविध काव्य का वर्गीकरण पाँच वर्णन-पद्धतियों के रूप में किया है-

(i) शुद्ध [redacted] वीर-काव्य (ii) श्रृंगार-मिश्रित वीर-काव्य (iii) वीर देव-काव्य (iv) अनुदित वीर-काव्य (v) दरबारी वीर-काव्य। इस विविधता को देखते हुए कहा जा सकता है कि क्षेत्रीय वर्णन तथा उद्देश्य के धरातल की विविधता इस युग की इस धारा के काव्य की अपनी निजी विशेषता है।

(२) ऐतिहासिक तथ्यों की रक्षा :-

यह तो निर्विवाद है कि इस युग का अधिकांश वीर-काव्य कवियों ने अपने आश्रयदाताओं के यशोगान के रूप में किया है, अतः उसमें अतिरंजितता का आना अनिवार्य है। इस काव्य में आदिकालीन साहित्य की तुलना में ऐतिहासिक तथ्यों की रक्षा अधिक मात्रा में की गयी है। इस दृष्टि से भूषण, गोरेलाल, पद्माकर, श्रीधर, सूदन एवं मान की रचनाओं को देखा जा सकता है। शिवाजी और महाराजा छत्रसाल के आश्रित कवियों को तो ऐतिहासिक सत्य की अवहेलना करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उनके नायक [redacted] तो स्वयंप्रकाशी ही थे, लेकिन छोटे-छोटे साधारण नायकों का चित्रण करने वाले कवियों ने भी ऐतिहासिक तथ्यों की उपेक्षा नहीं की है। इसके उदाहरण के रूप में श्रीधर के 'जंगनामा' को देखा जा सकता है। इसका नायक एक साधारण शासक है, लेकिन जहाँदारशाह और फर्रुखसियर के संघर्ष के चित्रण में कवि ने ऐतिहासिक सत्य का अनुसरण किया है। 'सुजान-चरित' में वर्णित सप्त-युद्ध इतिहाससम्मत घटनाएँ हैं। हरिनाथ-कृत 'सिंह-सागर' केसरीसिंह के ऐतिहासिक बलिदान की कथा है। प्रायः इस समय के वीर-साहित्य के अधिकांश नायक प्रख्यात तथा ऐतिहासिक हैं और कवियों ने उनके

गुणों का अतिरंजित वर्णन भले ही किया हो, किन्तु ऐतिहासिक घटनाओं को विकृत-रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कम ही किया है।

(शेषभाग बचा है।)

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० न०- 7909046087
दिनांक - 22 . 02 . 2022